सासाराम विकास खण्ड, जनपद रोहतास का पुरातात्विक सर्वेक्षण

–अनुष्का ओझा
शोध छात्रा, इतिहास विभाग
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

सासाराम विकास खण्ड रोहतास जनपद में केन्द्रीय भाग में स्थित है। रोहतास जनपद का मुख्यालय सासाराम में है (चित्र–1)। इसका प्राचीन नाम सहसराम और सहस्रार्जुनपुर बताया जाता है।[1] डॉ0 श्याम सुन्दर तिवारी ने सासाराम में ऋषि वशिष्ठ के सिद्धाश्रम होने की धारण व्यक्त की है जहां राम ने वशिष्ठ के यज्ञ में उत्पात करने वाले राक्षसों मारीचि (ताड़का–पुत्र) सुबाहु एवं अन्य का वध किया था।[2] इस विकास खण्ड का क्षेत्रफल 289 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 277.83 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण तथा 10.90 वर्ग किलोमीटर शहरी क्षेत्र है जिसमें 171 गांव हैं जिनमें 144 चिरागी (अधिवसित) और 27 बेचिरागी (निर्जन) हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार इस विकास खण्ड के 58,202 परिवारों में 3,58,283 लोग रहते थे। यहां का लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 911 स्त्रियों का था। यहां के 75.13 प्रतिशत लोग साक्षर हैं। पुरुषों की साक्षरता दर 69.16 प्रतिशत तथा महिलाओं की 56.37 प्रतिशत है[3]।

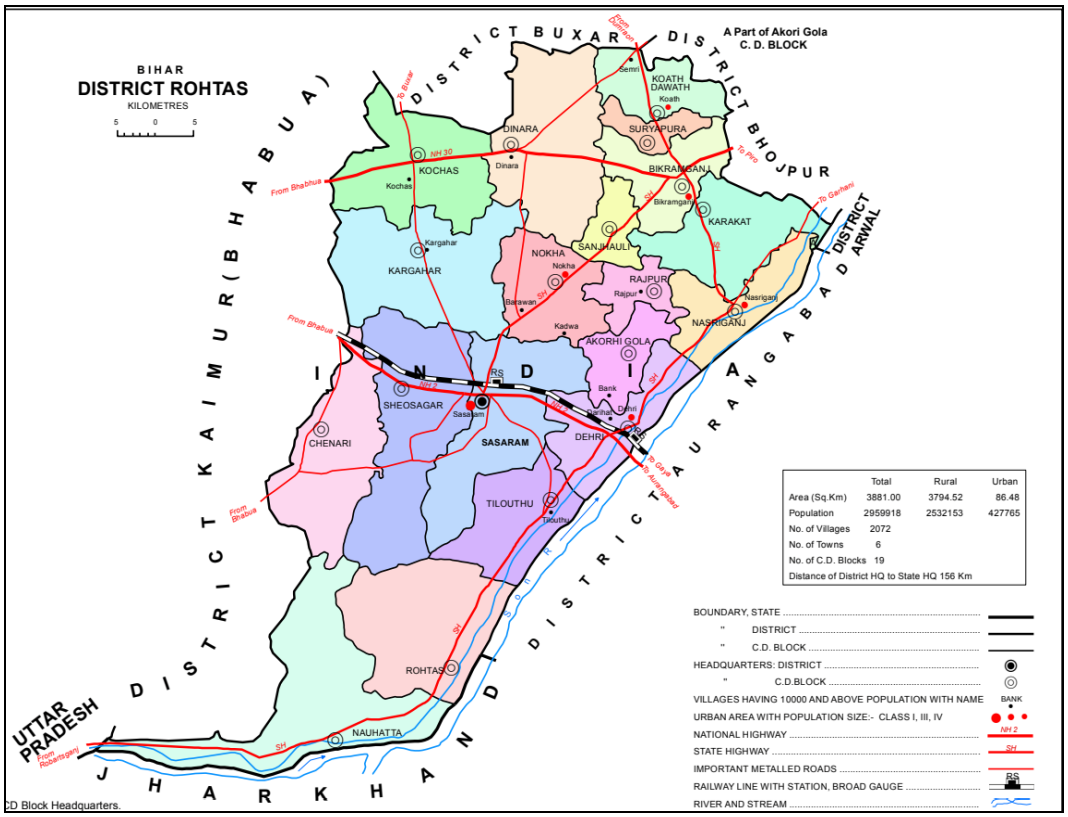

चित्र–1, रोहतास जनपद के मानचित्र में सासाराम विकास खण्ड

1. नकटा पहाड़ी

यह पहाड़ी सासाराम ब्लॉक से 4 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 56' 57'' उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 1' 55'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इस पहाड़ी पर एक मन्दिर बना है। पहाड़ी के निचले भाग में शिव, शनिदेव और बजरंगबली के मन्दिर बने हैं। ये सभी मंदिर आधुनिक काल में बनाए गए हैं (चित्र–2–3)। यहाँ से कोई मृद्भाण्ड के टुकड़े नहीं मिले हैं।

(चित्र–2, प्राचीन शिव मंदिर)

(चित्र–3, नकटा पहाड़ी मंदिर)

2. रजोखरः

यह पुरास्थल सासाराम से 6 किलोमीटर की दूरी पर एस0 पी0 जैन महाविद्यालय से होकर ताराचण्डी देवी के मन्दिर को जाने वाले मार्ग पर पूरब दिशा में 24^0 55' 3'' उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 1' 55'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इस टीले का क्षेत्रफल 1000 वर्गफीट है तथा लगभग 2 मीटर ऊँचा है। इस टीले के पास में ही एक प्राचीन कुँआ है। यहाँ से लाल रंग के मृद्भाण्ड के टुकड़े मिलते हैं जिससे स्पष्ट है कि इस स्थल पर मध्यकाल की एक बस्ती थी (चित्र–4–6)।

(चित्र 4–6 रजोखर का टीला एवं पक्का कूप)

3. टकसालसंगतः

यह सासाराम से 8 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 56' 3'' उत्तरी अक्षांश एव 84^0 1' 55'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ पर एक प्राचीन शिव मन्दिर है जिसके गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। मंदिर के बगल में एक बड़ा तालाब है। इस मन्दिर के पास ही कुछ ध्वंसावशेष रखे हुए हैं जो

पत्थर से निर्मित हैं। इनमें एक टूटी हुई मूर्ति का भाग है। दूसरा खण्ड स्थानीय मातृदेवी का पाषाण फलक है जिसमें सात पिण्डियॉ बनी हैं (चित्र:7–10)। यहाँ पर एक गुरुद्वारा भी है। इस पुरास्थल पर मध्यकालीन बस्ती थी।

(चित्रः 7–10, टकसाल संगत का शिव मंदिर एवं पाषाण अवशेष)

4. कादरीगंजः

यह सासाराम से 2 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में 24^0 56' 34'' उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 1' 7'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ पर अलावल खॉ का मकबरा है। अलावल खॉ ने ही शेरशाह सूरी के मकबरे की डिजाइन एवं रेखाचित्र बनाया था (चित्र–11)। यह संरचना मध्यकालीन है।

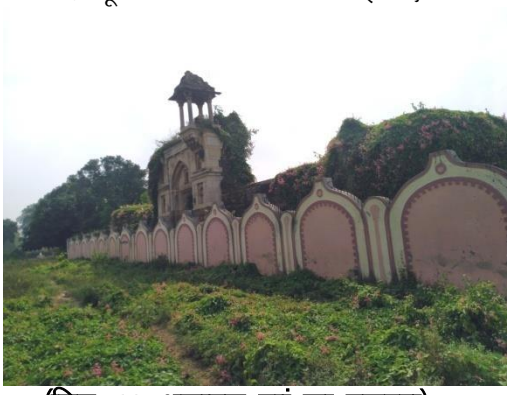

(चित्रः 11, अलावल खां का मकबरा)

(चित्रः 12, कर्पूरवा का प्राचीन कूप)

5. कर्पूरवाः

यह पुरास्थल सासाराम से 1 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम दिशा में 24^0 56' 54'' उत्तरी अक्षांश एव 84^0 0' 21'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ एक प्राचीन कुँआ है जिसे स्थानीय लोग इसे बादशाही कुँआ या हथिया कुँआ के नाम से पुकारते हैं। यह कुँआ पत्थर से निर्मित है (चित्र–12)।

6. खैराः

यह पुरास्थल सासाराम से 2 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम दिशा में 24^0 56′ 31'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 59′ 31'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहां पर तीन मनरसा/ बुर्ज लगभग 200×200 मीटर की दूरी पर स्थित है जो पत्थर और लखौरी ईंटों से निर्मित है (चित्र 13–15)।

(चित्रः 13–15, खैरा के मध्यकालीन भवनों के अवशेष)

वर्तमान में ये बुर्जियां टूट गई हैं। इनकी छतें ध्वस्त हो गई हैं। मात्र कुछ दीवालें एवं कुछ मेंहराबें शेष हैं। इनकी दीवालों पर लगा हुआ सुर्खी–चूना का प्लास्टर कहीं–कहीं पर बचा हुआ है। यह संरचना मध्यकाल की है।

7. भताड़ीः

यह पुरास्थल सासाराम से दक्षिण दिशा में 5 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 57' 8'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 59' 46'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ के बारे में स्थानीय लोगों का कहना है कि यहाँ एक छोटा सा भवन अवशेष था जो शेरशाह सूरी के समय में बनवाया गया था लेकिन वर्तमान समय में यह तालाब में पानी भर जाने के कारण डूब गया है। इसलिए इस समय वह नहीं दिख रहा है। इस पुरास्थल से लाल रंग के बर्तन प्राप्त होते हैं। पूर्व के सर्वेक्षण कर्ता श्री श्याम सुंदर तिवारी ने इसे एन.बी.पी. कालीन अधिवास बताया है किंतु यहॉ से इस प्रकार के कोई पात्र खण्ड उपलब्ध नहीं हुए। जो पात्रखण्ड मिले हैं उनके आधार पर यहां एक मध्यकालीन बस्ती होने की पुष्टि होती है।

8 सकास

सकास, सासाराम अनुमंडल से 10 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम तथा सेनुआर से 6 किलोमीटर पूरब में 24^0 55' 27'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 58' 33'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है[4]। इस पुरास्थल पर मुख्य टीला का 25 x 25 मीटर आकार का है। समीपवर्ती धरातल से इसकी ऊँचाई लगभग 3 मीटर है (चित्र–16)। जनवरी 2020 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी की टीम ने डॉ0 विकास सिंह के निर्देशन में यहाँ उत्खनन कार्य कराया था[5]। टीले के स्थलीय सर्वेक्षण से लाल, भूरे और कृष्ण लोहित प्रकार के पात्र खण्ड प्राप्त हुए। कृष्ण लोहित वर्ग के पात्रों में गहरे कटोरे 64.1–3, मध्यम आकार के कटोरे 64.4–6, छोटे आकार के कटोरे 64.7 तथा बड़े कटोरे 64.8 मिलते हैं (चित्र 18–19), जिनमें से कुछ का विवरण निम्नवत है–

(चित्रः16 टीले का सामान्य चित्र) (चित्रः 17–18 सकास के मृद्भाण्ड)

64.8 यह एक बड़े आकार का कटोरा है जिसका रिम बाहर की तरफ झुका हुआ है। इसका पार्श्व वर्तुल है यह मध्यम मोटाई की गढ़न में चाक पर निर्मित है। इसके बाह्य पार्श्व पर चमकदार लाल लेप तथा अंदर चमकदार काला लेप लगा है। इसका अनुभाग अंदर से अधिकांशतः काला है।

64.1 यह एक गहरा कटोरा है जो मध्यम मोटाई में चाक पर निर्मित है, इसका पार्श्व सीधा तथा इसके बाहर की तरफ चमकदार लाल लेप एवं अंदर की तरफ काला लेप लगा है। इसका शीर्ष लम्बवत् पतला है।

64.5 यह एक मध्यम आकार का कटोरा है, जिसका पार्श्व उन्नतोदर और रिम लम्बवत् सीधी तथा पतली है इसके बाह्य पार्श्व पर चमकदार लाल लेप तथा अंदर चमकदार काला लेप लगा है।

64.9 यह एक हाण्डी का टूटा हुआ भाग है जिसकी कॉलर तिरछी बाहर की तरफ फैली है। इसका गला संकीर्ण तथा पार्श्व बाहर की तरफ फैलता हुआ है। इसके बाह्य पार्श्व पर चमकदार लाल तथा अंदर की तरफ काला लेप लगा है। इसके गले की सीधाई में तीक्ष्ण, कोण पर मोड़ है। यह रुक्ष कणीय मिट्टी से पतली गढ़न में चाक पर बनाया गया है।

भूरे रंग के पात्रों में एक कटोरा उल्लेखनीय है 64.10। यह मध्यम मोटाई में बना है जिसके बाहर तीन खॉचें बने हैं तथा अंदर और बाहर रिम के नीचे लम्बवत् रेखाओं द्वारा गहरे भूरे रंग से चित्रण भी किया गया है।

(चित्रः 19–20 सकास के मृद्भाण्ड)

लाल रंग के पात्रों में कृष्ण–लोहित वर्ग के सीधे गहरे कटोरे (64.11) मध्यम आकार के कटोरे (64.12) कलश (64.13) मुख्य हैं। एक कटोरा (64.14) विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो मध्यम मोटाई की गढ़न में चाक पर बनाया गया है, इसका रिम भाग ऊपर से चौड़ा, मोटा तथा तिर्यक काट युक्त है। इसके अंदर और बाहर चमकदार लाल लेप लगा है तथा रिम के नीचे तिरछी रेखाओं की डिजाइन उत्कीर्ण है। इस पुरास्थल से लेप विहीन लाल रंग के अन्य पात्र भी मिलते हैं जिसमें टोटीदार कटोरे (64.15), घड़े (64.16) कटोर (64.17) हॉडी (64.18) मुख्य हैं (चित्र 19–20)। उत्खनन कर्ताओं ने इस स्थल को प्रारंभिक कृषि अवस्था एवं ताम्र–पाषाण युगीन बस्ती का अधिवास माना है।

9. सोनगाँवः

यह पुरास्थल सासाराम से दक्षिण दिशा में 14 किलोमीटर की दूरी 24^0 55' 27'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 58' 33'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। वर्तमान समय में अब वहाँ कुछ नहीं बचा है। लोगों ने वहाँ घर बना लिया है। स्थानीय लोगों के अनुसार बहुत पहले यहाँ सैनिक छावनी थी।

10. अनन्त गढ (कोटा):

यह टीला कलकत्ता से दिल्ली जाने वाले मार्ग से बाईं तरफ लगभग 1 किलोमीटर चलकर पुनः बाएँ मुड़ने पर 500 मीटर की दूरी पर 24^0 55' 59'' उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 1'10'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यह पुरास्थल चारों तरफ से काटकर समतल कर दिया गया है, बीच का कुछ अंश लगभग

20 मीटर की त्रिज्या में गोलाकार बचा हुआ है जो लगभग 7 मीटर ऊँचा है। इसके बीचो बीच एक विशाल काय बरगद का पेड़ है, इसके ऊपर लोग चबूतरा बना कर इस पर शिवलिंग रख कर पूजा करते हैं (चित्र–21)। टीले के चारों तरफ सब्जी की सघन खेती की जाती है। स्थलीय सर्वेक्षण करने से इस पुरास्थल से लाल रंग के मृद्भांड, कृष्ण लोहित मृद्भांड, भूरे रंग के मृद्भांड, कृष्ण लेपित मृद्भांड और टूटे हुए पत्थर के उपकरणों के अंश, सिल–बट्टे के टूटे हुए भाग प्राप्त होते हैं। इस टीले के थोड़ी ही दूरी पर एक क्रिश्चियन स्कूल भी है। यहॉ से मृद्भाण्ड के टुकड़े बहुत ही अधिक संख्या में मिलते हैं जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

(चित्रः 21 अनन्तगढ़ का टीला)

(चित्रः 22 अनन्तगढ़ के मृद्भाण्ड)

इस पुरास्थल से लाल रंग के बर्तनों में मोटी गढ़न में कालरदार संग्रह पात्र (50.1), चौड़े मुँह वाली हाँडियाँ (50.2–3), पानी के घड़े (50.4–5), बेसिन (50.6), बाहर की तरफ फैलते हुए रिम शीर्ष वाले कटोरे (50.7), छिछले कटोरे (50.8), सीधी बारी वाले घड़े (50.9–10), भूरे रंग की पात्र परंपरा में बेसिन (50.11) तथा लाल रंग के बर्तनों में सीधी बारी वाले गहरे कटोरे (50.12–14) मिलते हैं (चित्र–22)। कृष्ण लोहित प्रकार के पात्र आकार विहीन हैं। इसके अतिरिक्त कुछ पाषाण पिंड भी प्राप्त हुए हैं जिनसे ब्लेड निकले जाने के प्रमाण मिलते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि इस पुरास्थल पर ताम्र–पाषाण युगीन बस्ती रही होगी (चित्र–25)। इस स्थल का दुबारा सर्वेक्षण किया गया और जो पात्र खण्ड प्राप्त हुए उनका विवरण निम्नवत हैः

9.1 यह एक मोटे बड़े आकार के संग्रह पात्र का ऊपरी भाग है। इसकी मोटी कॉलर के अंदर एक खाँचा बना हुआ है। बाहर की तरफ रिम के बीचो बीच एक ग्रूव है, इसकी गर्दन बहुत संकुचित है और गर्दन के नीचे का भाग टूटा हुआ है। निम्न तापक्रम पर पकाए जाने के कारण अनुभाग में काले रंग की एक पट्टी दिखाई देती है।

9.2 यह पहले वाले संग्रह पात्र से भी बड़े आकार का लाल रंग का पात्र है। बनावट की तकनीक एक ही प्रकार की है यथा मोटी कालर अंदर की तरफ खाँचा, खाँचे के नीचे उभारदार रिज, संकीर्ण गर्दन और वर्तुल बाह्य आकार।

9.3 यह लाल रंग का एक द्रोणी (Basin) का टूटा हुआ ऊपरी भाग है, जिसका शीर्ष मोटा ऊपर से सपाट है। इसका पार्श्व सीधा तथा पेंदी सपाट है। इसे कम गुंथी मिट्टी से चाक पर बनाया गया है और मध्यम तापक्रम पर पकाया गया है। इसी से मिलते–जुलते दो और पात्र हैं जिन्हें 9.4 एवं 9.5 के नाम से चित्र संख्या 23 में दर्शाया गया है।

9.6 यह एक मोटी गढ़न में अंदर की तरफ झुकी हुई बारी वाली थाली है जो लाल रंग की है। इसे अच्छी तरह गुथी हुई मिट्टी से चाक पर बनाया गया है, इसी प्रकार का अन्य पात्र 9.7 एवं 9.8 है जबकि 9.9 भी थाली का ही अंश है, लेकिन यह बहुत पतली गढ़न में बनाया गया है।

(चित्रः 23–24 अनन्तगढ़ के मृद्भाण्ड)

(चित्रः 25 अनन्तगढ़ के पाषाण उपकरण)

यहाँ से विभिन्न युगों में चलने वाले लाल रंग के मिट्टी के कटोरे भी प्राप्त हुए हैं। जिनके आधार पर इस पुरास्थल पर एन0 बी0 पी0 काल के पूर्व मध्यकाल/मध्यकाल तक की बस्ती के होने का सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

9.10 यह एक लाल रंग के मिट्टी का गहरा कटोरा है जिसे धीमी गति के चाक पर बनाया गया है यद्यपि यह लाल रंग का है किन्तु उपयोग के कारण इसका बाहरी भाग जल गया है। इसका पार्श्व सीधा पेंदा सपाट है। यह मध्यम मोटाई में बना है तथा इसका अनुभाग लाल है इस प्रकार के कटोरे प्रायः एन0 बी0 पी0 काल में प्राप्त होते हैं।

9.11 यह भी एक लाल रंग का कटोरा है जिसका शीर्ष मोटा बाहर की तरफ झुका हुआ ऊंपर से सपाट है। इसका पार्श्व वरतुल ऊंपर काले रंग के धब्बे शेष भाग लाल है। यह मध्यम मोटाई में बना है जिसका अनुभाग लाल है।

9.14 यह एक लाल रंग का सीधी बारी का जिसका शीर्ष क्रमशः पतला होता गया है चाक पर बना कटोरा है, जिसका पार्श्व तिरछा है तथा अनुभाग लाल है। इस पर किसी भी प्रकार का लेप नहीं है। इसी से मिलता जुलता 9.12 और 9.19 भी है।

9.16 यह एक मध्यम मोटाई में भली –भांति गुथी मिट्टी से चाक पर बनाया हुआ कटोरे का शीर्ष भाग है जिसकी बारी सीधी ऊंपर से पतली और गोल है। इसके भीतर और बाहर लाल रंग का पतला लेप लगा है इसी प्रकार का पात्र 9.13 और 9.15 भी है।

9.17 यह अत्यंत महीन मिट्टी को भली–भांति गूँथकर चाक पर बनाई गयी लघु आकार की कटोरी है जिसका शीर्ष पतला अंदर की तरफ झुका, पार्श्व उन्नतोदर और आधार पैरदार है। यह भीतर , बाहर और अनुभाग से लाल है।

9.18 यह मोटी गढ़न का लाल रंग का एक बड़ा कटोरा है , जिसे धीमी गति के चाक पर बनाया गया है। इसका रिम साधारण ऊंपर जाकर पतला है। इसका पार्श्व तिरछा और पेंदा सपाट है। इसके बाहर और भीतर अँगुलियों के निशान हैं। इस प्रकार के कटोरे अधिकांशतः मध्य काल में पाए जाते हैं। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सर्वेक्षण के दौरान पुरास्थल से मध्यकाल की विशिष्ट पात्र परंपरा ग्लेज्ड बेयर का कोई भी टुकड़ा प्राप्त नहीं हुआ। इसके साथ एक साधारण मध्यम आकार का लाल रंग का कटोरा भी प्राप्त हुआ है 9.28 जो गुप्त काल की बस्ती के होने का संकेत करता है (चित्र–24)।

मिट्टी के घड़े –पुरास्थल से विभिन्न युगों के मिटटी के घड़े, कलश एवं हॉण्डी के टुकड़े भी प्राप्त होते हैं जो प्रायः लाल रंग के हैं 9.12 , 9.20 से 9.27। पुरास्थल से कृष्ण लोहित मृद्भाण्ड के खण्डित टुकड़ों पर डोरी के छाप के अंकन मिलते हैं। 9.29 भूरे रंग की पात्र परंपरा में पतली गढ़न का एक कटोरे का टुकड़ा प्राप्त हुआ जिसकी बारी सीधी ऊंपर से गोल और पार्श्व ऊंपर से सीधा है। इसे चाक पर बनाया गया है। इसका बाहर–भीतर अनुभाग भूरा है। कृष्ण लोहित प्रकार के मृद्भांडों में जो भी

पात्र खण्ड मिलते है उनमें से अधिकांश मोटी गढ़न के हैं, कुछ एक आकार विहीन टुकड़े पतली गढ़न में भी मिलते हैं। कृष्ण लेपित पात्रों में आकार विहीन टुकड़ों के साथ एक पतली गढ़न का कटोरे का अंश भी प्राप्त हुआ है जिसकी बारी सीधी ऊपर से गोल तथा पार्श्व सीधा है। शेष टुकड़े आकार विहीन हैं। इस पुरास्थल से एक टोंटीदार बर्तन की टोंटी भी प्राप्त हुई है। इसके साथ अगेट पत्थर से बना कंगन का टुकड़ा, मिट्टी का ठप्पा भी प्राप्त हुआ।

11 कोटा गढ़:

यह पुरास्थल सासाराम से 2 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण–पूर्व दिशा में राष्ट्रीय राजमार्ग के उत्तर रोड से सटा हुआ है तथा 24^0 55' 59'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 1' 10'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ में फैला है। इसकी समीपवर्ती क्षेत्र से ऊँचाई लगभग 8 मीटर है। अब स्थानीय लोग इस टीले को काट कर खेती कर रहे हैं। पूर्व में जब राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण हो रहा था तब टीले के एक हिस्से को काट दिया गया था (चित्र–26)। इस टीले से अच्छी किस्म के मृद्भाण्ड के टुकड़े प्राप्त होते हैं। यहाँ पर एक कुँआ भी है जो पत्थरों से निर्मित है।

(चित्रः 26, कोटागढ़, सामान्य चित्र)

(चित्रः 27 कोटागढ़ के मृद्भाण्ड)

इस पुरास्थल से लाल, कृष्ण लेपित एवं उत्तर कृष्ण मार्जित प्रकार के पात्र खण्ड प्राप्त होते हैं जिनमें लम्बी गर्दन वाले घड़े 44.1–2, हाँडी 44.3–5, बेसिन 44.6–7, मुख्य हैं। लाल रंग के कुछ बर्तनों पर चटाई के छाप का अंकन भी मिलता है 44.11। इन पात्रों के अतिरिक्त कृष्ण लेपित प्रकार के पात्रों में पतली गढ़न की थालियाँ 44.8, सीधी बारी वाले कटोरे 44.9 तथा सुनहरे रंग वाले उत्तर कृष्ण मार्जित पात्र परंपरा की थालियों 44.10 के अवशेष प्राप्त हुए हैं (चित्र–27)। जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकालना सहज है कि यह पुरास्थल एन0 बी0 पी0 काल में निवसित था।

12. धनकरहा:

यह पुरास्थल सासाराम से 15 किलोमीटर की दूरी पर पूरब दिशा में 24^0 54' 49'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 4'45'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ एक गढ़ है जिसे स्थानीय लोग राजा मुरली राउत द्वारा बनवाया गया मानते हैं। अब यह गढ़ नष्ट हो चुका है। इसकी कुछ दिवालें ही शेष बची हैं। इसके अधिकांश भाग को लोगों ने कब्जा करके घर बना लिया है (चित्र–28)।

(चित्रः 28, धनकरहा, गढ़ी के अवशेष)

13 लेरुआः

यह पुरास्थल सासाराम से पूरब दिशा में 18 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 55' 41'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 6' 53'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ लगभग 1/2 एकड़ क्षेत्र से मृद्भाण्ड के टुकड़े मिलते हैं

(चित्रः 28, लेरुआ, सामान्य चित्र)

(चित्रः 29, लेरुआ, शिव मंदिर)

(चित्रः 30, लेरुआ, शिवलिंग)

लेकिन इनकी मात्रा कम है। यहीं एक प्राचीन शिव मन्दिर भी है। ये सब गाँव से बाहर है। इसके अलावा गाँव में भी एक शिव मन्दिर बना है किन्तु यह बहुत बाद का है। इस मंदिर में शिवलिंग एवं स्थानीय ग्राम देवी की पाषाण प्रतिमाएं मिलती हैं (चित्र–28–34) ।

(चित्रः 31–32, लेरुआ, गांव के बाहर शिव मंदिर एवं शिवलिंग) (चित्रः 33–34, लेरुआ, स्थानीय ग्राम देवी एवं मृद्भाण्ड)

इस पुरास्थल से मात्र लाल रंग के पतली और मध्यम मोटाई की गढ़न में चाक पर बने मृदभाण्ड अवशेष मिलते हैं। ये सभी प्रायः आकार विहीन हैं जिनके आधार पर इस स्थल के प्राचीन अधिवास का आकलन दुष्कर है, संभव है यहॉ दो–तीन सौ वर्ष पहले कोई छोटी बस्ती रही होगी।

14. कंचनपुर

यह पुरास्थल सासाराम से 10 किलोमीटर की दूरी पर पूरब दिशा में 24^0 55' 17'' उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 4' 51'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ पर पहले एक गढ़ था। वर्तमान समय में यह पूरी तरह से नष्ट हो चुका है। इसका आकार 70 x 30 मीटर आकार का है तथा यह 50 सेंटीमीटर ऊँचा है। इसके ऊपर जंगली घास उगी है तथा इसके ऊपर लोग कूड़ा फेंकते हैं। यहाँ से अन्य कोई अवशेष नहीं मिलता है (चित्र–35)।

(चित्रः 35, कंचनपुर, टीले का सामान्य चित्र)

15. अमरटीला

यह पुरास्थल सासाराम से पूरब दिशा में 8 किलोमीटर तथा सासाराम–डेहरी रोड के उत्तर दिशा में 24^0 57' 11'' उत्तरी अक्षांस एवं 84^0 4' 57'' पूरबी देशान्तर पर रेलवे लाइन के किनारे स्थित है। यह पुरास्थल लगभग एक एकड़ में फैला हुआ है। इसके आधे से ज्यादा भाग पर लोग खेती कर रहे हैं तथा शेष खाली पड़ा है। यह लगभग 1 मीटर ऊँचा है। यहाँ से मृद्भाण्ड के टुकड़े प्राप्त होते हैं। अमरा बाजार के पास ही एक बहुत बड़ा प्राचीन तालाब है तथा बाद में यहाँ दो मन्दिर भी बनाए गए हैं।

(चित्रः 36, अमरटीला, सामान्य चित्र)

(चित्रः 37, अमरटीला, मृद्भाण्ड)

इस पुरास्थल से मुख्य रूप से लाल रंग के बर्तन प्राप्त होते हैं जो मध्यम से मोटई की गढ़न में चाक पर बनाए गए हैं जिनमें मोटी और ऊपर से सपाट रिम वाले कटोरे 92.1, नेल हेडेड कटोरे 92.

2, कलश 92.3, घड़े 92.4–5, टेराकोटा डिस्क 92.6 आदि मुख्य हैं। एक खंडित पात्र पर रेखीय डिजाइन भी उत्कीर्ण है। इस प्रकार का अलंकरण प्रायः मध्यकालीन पात्रों पर प्राप्त होता है 92.7 (चित्र–37)। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इस पुरास्थल पर मध्यकालीन बस्ती होने की संभावना दिखाई देती है।

16. आशिकपुर (मेदिनी):

यह पुरास्थल सासाराम से पूरब दिशा में 5 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 57' 14'' उत्तरी अक्षांस एवं 84^0 2' 51'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इस टीले का 150 x 100 मीटर आकार है तथा 1 मीटर ऊँचा है। अब इस टीले को समतल करके लोग इस पर खेती कर रहे हैं। यहाँ से मृद्भाण्ड के टुकड़े प्राप्त होते हैं।

इस पुरास्थल से लाल रंग के बर्तन प्राप्त होते हैं जिसमें घड़े, कटोरे और हॉडियॉ मुख्य हैं, जो मध्यकालीन बस्ती की होने की संभावना प्रकट करता है।

17. अदमापुरः

यह पुरास्थल सासाराम से 7 किलोमीटर की दूरी पर पूरब दिशा में 24^0 7' 57'' उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 0' 44'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इस पुरास्थल को लोगों ने बहुत नुकसान किया है। पुरास्थल के कुछ भाग पर प्राथमिक विद्यालय तथा मण्डल कारागार बना हुआ है। शेष जगह पर लोगों का कब्जा है। यहाँ से मृदभाण्ड के टुकड़े मिलते हैं।

(चित्रः 38, अदमापुर, सामान्य चित्र)

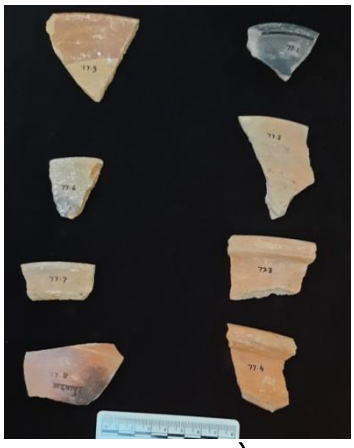

(चित्रः 39, अदमापुर, मृद्भाण्ड)

इस पुरास्थल से काले और लाल रंग के पात्र खण्ड प्राप्त होते हैं। काले रंग का एक घड़ा 77.1, लाल रंग के बड़े आकार के कटोरे 77.2, लम्बी गर्दन वाले 77.3–4, मोटी बारी वाले छिछले कटोरे 77.5, साधारण मझले आकार के कटोरे 77.6, हाण्डी 77.7 मुख्य हैं। कुछ पात्रों पर गहरा चमकदार लेप भी लगा है 77.8 इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह पुरास्थल मध्य काल में निवसित रहा होगा (चित्र 38–39)।

18. करबन्दियाः

यह पुरास्थल सासाराम से 5 किलोमीटर की दूरी पर पूरब दिशा में 24^0 57' 5'' उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 5' 44'' पूरबी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ पहाड़ी के सबसे ऊपरी भाग पर एक बुर्ज का निर्माण हुआ है जो आधुनिक काल का है।

19. अशोकपुर पहाड़ीः

यह पहाड़ी सासाराम से दक्षिण–पूरब में 4 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 56′29′′ उत्तरी अक्षांश एवं 84^0 02′ 18′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसे चंदनपीर पहाड़ी के नाम से भी जानते हैं[6]। इस पहाड़ी के ऊपर ही अशोक का एक शिलालेख है। वर्तमान में उसी जगह पर चंदनपीर की एक मजार बना दी गई है तथा शिलालेख को एक छोटी गुफा के अन्दर ही बन्द कर दिया गया है।

20. अगरेर गढ़

यह पुरास्थल सासाराम–आरा रोड से 8 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम में 24^0 57′ 49′′ उत्तरी आक्षांश एवं 84^0 1′ 35′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। वर्तमान समय में इस पर लोगों ने घर बना लिया है तथा इसी के ऊंपर एक आगनबाड़ी केन्द्र भी बन गया है। यह लगभग 50×30 मीटर आकार का है तथा इसकी ऊंचाई 1.5 मीटर के आस–पास है (चित्र–40)।

(चित्रः 40, अगरेरगढ़ का टीला)

(चित्रः 41, मोकरगढ़ का टीला)

(चित्रः 42, चौखण्डा का टीला)

21. मोकर गढ़

यह पुरास्थल भी सासाराम–आरा रोड से 4 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिममें 24^0 57′ 49′′ उत्तरी आक्षांश एवं 84^0 1′ 35′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। यहॉ भी लोगों ने इसको हटाकर घर बना लिया है यहा अब कोई भी जगह खाली नहीं है पहले यहॉ पर मृद्भाण्ड के टुकड़े मिलते थे। वर्तमान समय में यह पूरी तरह से नष्ट हो गया है (चित्र–41)।

22. चौखण्डा (चितौली डीह)

यह पुरास्थल सासाराम से 6 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 58′ 44′′ उत्तरी आक्षांश एवं 84^0 0′ 0′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। इस स्थान को लोग डीह बोलते हैं। वर्तमान समय में यहॉ पर धान की खेती की जा रही है यहॉ पहुचने के लिए कोई रास्ता नहीं है बर्सात में यहॉ चारो तरफ पानी भरा रहता है (चित्र–42)।

23. सासाराम

यह पुरास्थल 24^0 57′ 8′′ उत्तरी आक्षांश एवं 84^0 0′ 44′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। यहॉ पर शेरशाह सूरी का तथा उसके पिता हसनशाह सूरी का मकबरा है। शेरशाह सूरी का मकबरा दिल्ली के सैय्यद और लोदी शासकों के मकबरों के अनुकरण पर बनाया गया है। आकृति में यह ग्वालियर के मोहम्मद धाउथ के मकबरे की भांति है। इसकी डिजाइन मीर मुहम्मद अलीवाल खान ने तैयार की थी। यह 1400 वर्ग फीट क्षेत्रफल में बना है तथा एक कृत्रिम झील जो 1100 फीट लम्बी तथा 1000 फीट चौड़ी है के बीचो–बीच स्थित है। इसका निर्माण शेरशाह के समय में ही प्रारम्भ हो गया था और काफी हद तक पूर्ण भी हो गया था किन्तु 22 मई 1545 को कालंजर के किले पर आक्रमण के समय गोला बारूद के विस्फोट में घायल होकर मर जाने के कारण वह इसे परिपूर्णता नहीं प्रदान कर सका। शेष निर्माण कार्य उसके पुत्र इस्लाम शाह द्वारा 16 अगस्त 1945 को पूर्ण कराया गया जिसमें किले की चहरदीवारी से संलग्न चार छतरियों का निर्माण मुख्य है (चित्र–43)।

(चित्र 43, शेरशाह के मकबरे की छतरियां)

(चित्र–44, शेरशाह का मकबरा, सासाराम)

यह मकबरा लाल बलुए पत्थर से निर्मित है जिसमें मसाले के रूप में सुर्खी और चूने का प्रयोग किया गया है। इसके निर्माण में कुल 4 वर्ष लगे थे। इसमें कुल तीन तल्ले हैं जिसकी ऊॅचाई 120 फीट है। यह आगरा के ताज महल से 13 फीट अधिक ऊॅचा है। स्थापत्य संबंधी विशिष्टता एवं सुन्दरता के कारण इसे दूसरा ताजमहल कहा जाता है। यह पठान वास्तुकला का सुन्दर मूर्त रूप है[7]।

मकबरे में प्रवेश करने के लिए तालाब के उत्तर में बने हुए शेरशाह के एक दरवान के मकबरे से होकर जाना पड़ता है। इस मकबरे का परिमाप 35 X 35 फीट है जिसके बीच में दरवान की मजार है। इसमें पूरब दिशा से प्रवेश कर दक्षिण की ओर निकलना होता है। पुनः सीढ़ियों से उतर कर एक पुल जो 243 फीट लम्बा है, से होकर मुख्य मकबरे तक पंहुचा जा सकता है।

इस मकबरे को ऊपर की तरफ घटते क्रम में दो चबूतरों पर बनाया गया है। नीचे का चबूतरा वर्गाकार है जिसकी प्रत्येक भुजा 243 फीट है।[8] इसके ऊपर का चबूतरा 216X212 फीट परिमाप का है जिसकी ऊॅचाई 22 फीट है। चबूतरे के चारो ओर चहरदीवारी है जिसके ऊपर कंगूरे बने हैं। चहरदीवारी के चारो कोनों पर अष्टकोणीय कक्ष बने हैं जिसमें मेहराबदार आठ–आठ द्वार हैं। प्रत्येक पहल में दो–दो रोशनदान भी बने हैं। चबूतरे के बीचो–बीच 135 फीट व्यास में यह मकबरा निर्मित है। इसके चारो ओर 10 फीट चौड़ा तथा 22 फीट ऊॅचा बरामदा है जिसे मोटे–मोटे खम्भों पर रोका गया है। मकबरे की बाहरी दीवारें बहुत मोटी हैं जबकि अन्दर की दीवारों की मोटाई 16 फीट है। इस मकबरे के आठो पार्श्वों में 3–3 मेहराबदार दरवाजे हैं जो खुले हैं और उनसे पर्याप्त प्रकाश अन्दर आता है। प्रत्येक दरवाजे के ऊपर छोटे–छोटे गुम्बद बने हैं। मकबरे में बरामदे के बाद अन्दर की तरफ एक बड़ा कक्ष है जिसका व्यास 71.5 फीट है। इसी कक्ष के बीच में शेरशाह की कब्र है जिसके सिराने एक स्तम्भ लगा है।

चित्र–मकबरे के अन्दर का दृश्य

इस कक्ष में उसके अन्य संबंधियों की 24 और कब्रें हैं। मकबरे के प्रथम तल पर जाने के लिए दक्षिणी–पूरबी पार्श्व से सीढ़ियां बनी हैं जिनकी ऊॅचाई 1 फीट तक है। प्रथम तल के चारो ओर मुंड़ेर

बनी है। इसके आठो कोनों पर 6–6 स्तम्भों पर टिकी बुर्जियां बनी हैं। प्रथम तल से ऊपर गुंबद प्रारम्भ होता है जिसका आधार व्यास 80 फीट है। इस गुम्बद के ऊपर कमलदल, आमलक, तथा कलश बना है। मकबरे के तृतीय तल पर जाने के लिए यहां दो सीढ़ियां हैं। इसकी छत सपाट है। इसके चारो ओर कंगूरेदार मुंडेर बनी है।

अकबर के शासन काल में इस मकबरे को तोड़ने का प्रयास किया गया था। उसके द्वारा चलाए गए तोप के गोलों के निशान आज भी देखे जा सकते हैं। ब्रिटिश काल में इसका पुनः जीर्णोद्धार किया गया था। वर्तमान में यह मकबरा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित है।

सलीम शाह का मकबराः

सलीमशाह का दूसरा नाम इस्लाम शाह सूरी था। यह शेरशाह सूरी का उत्तराधिकारी था। इसका मकबरा शेरशाह सूरी के मकबरे के उत्तर–पश्चिम में एक किलोमीटर की दूरी पर रेलवे लाइन के उत्तर में बहुत घनी बस्ती के बीच बना है। इसका नियोजन एवं इसकी भव्यता शेरशाह सूरी के मकबरे से अधिक थी किन्तु इस वंश के शासन के पतन हो जाने के कारण इसका निर्माण पूरा नहीं किया जा सका। यह मकबरा 1250 वर्ग फीट आकार की झील के बीचो बीच 350 वर्ग फीट में बनाया गया है। इस तक पंहुचने के लिए 500 फीट लम्बे 33 फीट चौड़े पुल का निर्माण किया गया है जिसमें 11 मुहाने हैं। इनके ऊपर गुम्बज हैं।

चित्र–44, इस्लामशाह सूरी के मकबरे की सड़क, सासाराम

मकबरे का चबूतरा जल तल से आठ–दस फीट ऊंचा है जिस पर जाने के लिए चारो तरफ से सीढ़ियां बनी हैं। इसके चारो कोनों पर अष्ट पहल वाली छतरियां बनी हैं। बीच का कक्ष जिसमें बीचो बीच शलीम शाह की कब्र है और इस कब्र को लेकर यहां कुल सात कब्रें हैं। इस कक्ष का परिमाप 74′–6′′ है। यह मकबरा 10 से 15 फीट की ऊंचाई तक बना है। इसकी कुछ मेहराबें पूरी हुई हैं तथा कुछ अधूरी ही रह गईं हैं ओर यह मकबरा पूरी तरह से बनाया नहीं जा सका है। वर्तमान में इन कब्रों के ऊपर झाड़ियां उग आई हैं तथा यह मकबरा प्रायः बन्द रहता है[9] (चित्र–44–45)।

चित्र–45, इस्लामशाह सूरी का मकबरा, सासाराम

बुकनन ने सलीमशाह के मकबरे के दक्षिण में एक अन्य निर्माणाधीन किन्तु अपूर्ण मकबरे का उल्लेख किया है जिसे बनाने के लिए झील खोदकर उसकी मिट्टी किनारे डाल कर सीढ़ियां बनाई गईं किन्तु बीच में कोई मकबरा नहीं बनाया जा सका। संभवतः यह मकबरा शेरशाह के वजीर सरमस्तखान का था जबकि अन्य लोगों की मान्यता है कि यह राजकुमार के भाई रुनुदस्त के लिए बनाया जा रहा था[10]।

हसनशाह सूर का मकबरा

सासाराम शहर में शेख अबू सरवानी के अनुरोध पर शेरशाह सूरी द्वारा 1535 ई0 में अपने पिता हसन खान सूर का मकबरा बनवाया गया था जो आज भी अवशिष्ट है। स्थानीय लोग इसे सूखा रौजा के नाम से जानते हैं। यह मकबरा चारो तरफ से चहरदीवारी से घिरे एक 345X296 फीट परिमाप के आंगन के बीचो–बीच बना है। इसे समान आकार की पत्थर की ईंटों की चिनाई द्वारा बनाया गया है (चित्र–46)।

चित्र–46, हसनशाह का मकबरा, सासाराम

इसकी चारो दीवारों में प्रवेश द्वार हैं तथा चारो कोनों पर बुर्जियां बनी हैं। मुख्य मकबरा अन्दर से 62 फीट 6 इंच में बना है जिसके चारो ओर आठ फीट चौड़ा बरामदा है। इसका बाहर से परिमाप 112 फीट है। बरामदे में प्रत्येक तरफ तीन–तीन मेहराबें हैं जिनके ऊपर बुर्जियां बनी हैं। मकबरे के मुख्य कक्ष की ऊंचाई बरामदे से अधिक है तथा उसके ऊपर गुम्बद बनाया गया है। यह मकबरा ज्यामितिक आकृतियों एवं फूल पत्तियों की डिजाइन से परिपूर्ण है। कहीं–कहीं कुरान की आयतें लिखी गई हैं जो अब धूमिल हो रही हैं। मुख्य कक्ष में कुल 25 कब्रें हैं। यहां एक अभिलेख भी है[11]। इसी परिसर में एक छोटी सी मस्जिद और एक मदरसा भी है[12]। वर्तमान में यह मकबरा प्रायः बन्द रहता है। मुहल्ले के

बच्चे यहीं परिसर में गेंद खेलते हैं तथा गन्दगी फैलाते हैं। इसके बगल में एक कूआं है जो कूड़ा फेंकने से भर गया है।

अलावलखान का मकबरा

अलावल खान जिसका पूरा नाम अलाउद्दीन खान था, वह शेरशाह सूरी के 5000 घुड़सवारों का मुखिया था तथा भवन निर्माण का अधीक्षक था। वह चाहता था कि उसके मकबरे में शेरशाह के मकबरे में प्रयुक्त सामग्री से अच्छी सामग्री लगाई जाय जिसकी जानकारी शेरशाह को हो गई और उसे अपमानित होना पड़ा तथा यह मकबरा कभी पूरा नहीं हो सका। यह मकबरा सासाराम शहर से दक्षिण में केदारगंज मोड़ के पास थोड़ी दूरी पर स्थित है। इसका आंगन बाहर से 112′–10′′X 111′ है जिसके अन्दर 103′ X103′ स्थान है। इसके चारो ओर पत्थर की ऊंची–ऊंची चहरदीवारी है जिसमें पूरब, दक्षिण और उत्तर में तीन तरफ दरवाजे हैं। चहरदीवारी के चारो कोनों पर 8′–2′′X 8′–2′′ के कक्ष बने हैं जिनमें तीन की छत गुम्बदाकार है। चौथा यानि कि पूरबी दरवाजा जो उत्तर पश्चिम के कोने पर है वह दो तल्ला है, तथा उसकी छत सपाट है। यह अभी सुरक्षित है। शेष दो नष्ट होने के कगार पर हैं। पूरबी दरवाजा दो मेहराबों की बालकनी के ऊपर बनाए गए दो छतरियों से युक्त है। पश्चिमी दीवार के मध्य वाले दरवाजे के ऊपर भी इसी प्रकार की दो छतरियां बनी हैं। इस प्रांगण के बीच में कोई मकबरे का कक्ष या भवन नहीं बन पाया। मात्र यहां खुले में तीन कब्रें हैं जिसमें एक अलावल खान की है शेष दो उसके संबंधियों की हैं किन्तु इन पर किसी का नाम अंकित नहीं है (चित्र–47)। अलावल खान की कब्र पर कलमा लिखा गया है। शहर से दूर एकान्त में होने के कारण इस स्थान का उपयोग लोग गलत प्रसंग में करने लगे जिससे यह स्थान अप्रशंसित हो गया[13]।

चित्र–47, अलावलखान का मकबरा, सासाराम

नवाबगढ़ (किला सासाराम):

हसनखान सूर के समय में सासाराम उसकी एक जागीर थी। पूरा शहर चहरदीवारी से घिरा था और उसके बीच में एक दुर्ग था। आज यह खंडहर के रूप में है। बुकनन ने यह उल्लेख किया गया है कि नवाब सफदर खान जिन्हें इस क्षेत्र के प्रशासन की जिम्मेदारी दी गई थी, उन्हें आदेशित किया गया था कि वे सासाराम में एक किले का निर्माण करवाएं। सफदरखान एक कम समझ और फिजूलखर्च इन्सान था। उसने एक किले की नींव डाली जो समानान्तर चतुर्भुज के आकार का था। इसके चारो कोनों पर बुर्जियां थीं। इसकी दीवारें मात्र औरतों को पर्दे में रखने लायक थीं। उसने यद्यपि इसका विशाल प्रवेशद्वार बनवाया किन्तु अधिकांश धन रंगमहल (जनान खाना) बनाने में व्यय किया। यह जनान खाना तीन तल्ला था जिसके दोनों तरफ पोर्टिको बनाया गया था। आज यह सब खण्डहर हो चुका है[14]।

चित्र–48, कन्दहार किला, सासाराम ।

सिक्ख मंदिर एवं संगतः

सासाराम में गुरु की बाग में सिक्ख मंदिर एवं संगत है। इसका संबंध गुरु तेग बहादुर से बताया जाता है[15]।

24 सुखारी टोला

यह पुरास्थल सासाराम से 4 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 57′ 0′′ उत्तरी आक्षांश एवं 84^0 0′ 36′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। यह एक गॉव है, यहॉ पर एक प्राचीन कुॅआ है इसके बारे में बुजुर्गों का कहना कि गॉव बसने से पहले से ही यह कुॅआ था।

25 बेलहर

यह पुरास्थल सासाराम से 5 किलोमीटर की दूरी पर 24^0 56′ 54′′ उत्तरी आक्षांश एवं 84^0 0′ 19′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। यहॉ एक प्राचीन काली मन्दिर है इसके गर्भगृह के अन्दर एक पत्थर पर कुछ पिण्डी बनी हुई है उसी को लोग काली माता के नाम से पूजते हैं, बाकी मन्दिर बाद का बना हुआ है (चित्र 49–50)।

(चित्र–49–50, बेलहर, काली मंदिर एवं गर्भगृह में रखी काली मॉ की पिण्डियां)

26. खैरी

यह पुरास्थल सासाराम ब्लाक में मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर 24º 56′ 23′′ उत्तरी अक्षांश तथा 84º 0′4′′ पूरबी देशांतर पर स्थित है। समीपवर्ती धरातल से इसकी ऊँचाई लगभग 1 मीटर है जो चार एकड़ में फैला हुआ है। वर्तमान में टीले पर खेती की जा रही है। टीले पर एक प्राचीन कुआँ है।

(चित्र–51–53, खैरी, पाषाण स्तम्भ के अलंकृत खण्ड एवं मृद्भाण्ड)

यहाँ से एक पत्थर का टूटा हुआ स्तंभ प्राप्त हुआ है जिस पर एक देवाकृति उत्कीर्ण है। प्रश्नगत पुरास्थल से लाल रंग के मृद्भाण्ड प्राप्त होते हैं जो मध्यम मोटाई में चाक पर बनाए गए हैं । कुछ एक पर अच्छे ढंग का लाल लेप लगा है। प्रमुख पात्र आकारों में हाण्डी 63.1, कटोरे 63.2, छोटे आकार के घड़े 63.3 बेसिन 63.4 मुख्य हैं, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकाल की कोई बस्ती रही होगी (चित्र–51–53)।

27. दरिगॉवगढ़ः

यह पुरास्थल सासाराम विकास खण्ड से 12 किलोमीटर की दूरी पर पूरब दिशा में 24^0 52’ 39’’ उत्तरी अक्षांश एव 83^0 52’ 48’’ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इसका विस्तार लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में है। यह समीपवर्ती धरातल से लगभग 7 मीटर ऊँचा है। टीला पेड़–पौधों एवं जंगली घास–फूस से आच्छादित है। इस टीले को किनारे से कुछ लोगों ने काट दिया है। टीले के चारो तरफ खेत है तथा टीले के नीचे और ऊपर से मृद्भाण्ड के टुकड़े मिलते हैं (चित्र–54)।

(चित्र–54–55, दरिगांव गढ़ का टीला एवं उससे प्राप्त होने वाले मृद्भाण्ड)

इस पुरास्थल से मुख्यतः लाल रंग के बर्तन प्राप्त होते हैं जिनमें सीधे कटोरे/कप 73.1–2, छिछले कटोरे 73.3, मोटी गढ़न के कटोरे 73.4, दियाली 73.5, रिम विहीन कोणाकार हॉडी 73.6, कालरदार हॉडी 73.7, कालरदार घड़े 73.8–9, बेसिन 73.10, कोंखदार हॉडी 73.11 आदि मिलते हैं।

कुछ पात्रों पर चमकदार लेप भी लगाया हुआ मिलता है 73.12 उपरोक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस पुरास्थल पर एक मध्ययुगीन बस्ती रही होगी। इसे पूर्व के सर्वेक्षण कर्ताओं ने नवपाषाण कालीन बस्ती माना है (चित्र–55)।

28. सेनुआर

यह पुरास्थल सासाराम से 07 किलोमीटर पश्चिम में 24^0 56′ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 56′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। सेनुवार का टीला कुदरा नदी के दाहिने किनारे पर लगभग 1/2 किलोमीटर की दूरी पर समतल क्षेत्र में स्थित है। इसका विस्तार 300 × 360 मीटर क्षेत्र में है तथा यह समीपवर्ती धरातल से 09 मीटर ऊँचा है[16]। कैमूर की पहाड़ियां यहां से 8–9 किलोमीटर की दूरी पर हैं। सेनुवार में उत्खनन प्रारम्भ करने के पूर्व प्रोफेसर सिंह ने रोहतास एवं कैमूर के कुछ क्षेत्र का सर्वेक्षण कर 35 पुरास्थलों की पहचान की थी[17] जिनमें से सकास, मलांव, डाइनडीह, सेनुवार, बादलगढ़, अकोढ़ी, कुसुरीडीह, राजा की अखोड़ी, माधुरी को उन्होंने नवपाषाण काल– ताम्र पाषाण काल की बस्ती माना था। उस समय उनकी यह धारणा बनी थी कि इस क्षेत्र में एकल संस्कृति के अधिवास नहीं हैं[18]। प्रोफेसर सिंह की टीम ने सेनुवार के टीले विभिन्न भागों में 10 निखातों (SNR-1-SNR-10) मे उत्खनन किया जिनमें 2 निखातों (SNR-9, 10x 5 मीटर) और (SNR-10) में उन्हें पूरा सांस्कृतिक जमाव प्राप्त हुआ जब कि अन्य चार निखातों (SNR-3, SNR-4, SNR-5, SNR-6) में सुव्यवस्थित जमाव न मिलने के कारण उनमें उत्खनन नहीं किया गया। निखात (SNR-9, 10x 5 मीटर क्षेत्र में) उत्खनित की गई थी जिसमें 9.98 मीटर मोटे जमाव में 16 स्तर मिले थे जिसमें निचले हिस्से में स्तर 16 एवं 15 से उन्हें चिरांद, मनेर, ताराडीह और चेचर–कुतुबपुर की भांति नव पाषाणिक सामग्री प्राप्त हुई जिसे उन्होंने काल 1ए में रखा। इस धरातल से उन्हें कार्डेड वेयर, रस्टिकेटेड वेयर, वर्निस्ड ग्रे, बर्निस्ड रेड तथा लाल रंग के पात्र खण्ड प्राप्त हुए थे। पुरावशेषों में पत्थर के गेंद, पत्थर की कुल्हाड़ियां, लघुपाषाणोपकरण, हड्डी के उपकरण, बोन प्वाइंट, मिट्टी के मनके तथा सीप के ताबीज मुख्य थे।

स्तर 14 से 11 तक जो 2.57 मीटर मोटा था, उन्हें काली मिट्टी का जमाव प्राप्त हुआ जिसमें राख और कोयला सम्मिश्रित था। इसके निचले धरातल पर गर्त युक्त एक फर्श भी मिली थी। इस जमाव में प्रथम ए काल खण्ड के पात्रों का सातत्य बना रहा जबकि उत्खनन कर्ताओं ने यह पाया कि इस जमाव में पात्रों की संख्या अधिक हो गई तथा उन पर चमक और अच्छी हो गई। इस स्तर से उन्हें एक तांबे का छल्ला, फियांस, स्टिअटाइट, जैस्पर, अगेट और चैल्सिडनी के मनके, लघु पाषाणोपकरण, अस्थि उपकरण, रबर स्टोन तथा लोढ़े प्राप्त हुए थे। इस जमाव को उन्होंने काल खण्ड बी नाम दिया जिसे नवपाषाण काल–ताम्रपाषाण काल का माना था[19]।

स्तर 10 से 6 जो 2.30 मीटर मोटा था, इसमें सतर 10 एवं 9ए क्रमशः 38 तथा 07 सेंटीमीटर मोटी मिट्टी कूट कर बनाई गई फर्श थी। इन जमावों की मिट्टी हल्के पीलेपन के साथ ठोस और भूरे रंग की थी जिसमें कालखण्ड प्रथम के पात्रों के साथ कृष्ण लोहित मृद्भाण्ड, कृष्ण लेपित मृद्भाण्ड, चमकदार काले मृद्भाण्ड तथा चमकदार काले पर लाल रंग के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए। इसी जमाव से उन्हें पहली बार थाली के नमूने भी मिले। अन्य पुरावशेषों में तांबे की कान की बाली, पिन, चूड़ियां, सेमी प्रीसस स्टोन के मनके, सीपी के उपकरण एवं ताबीज, दोनों तरफ कार्यांग वाले बोन प्वाइंट, लोढ़े, रबर, पत्थर के बटखरे, मिट्टी के मनके और स्टापर मुख्य थे। इसे उन्होंने कालखण्ड द्वितीय ताम्र–पाषाण काल में रखा।

स्तर 5 से 3 तक कालखण्ड ।।। में रखा गया जिसे उन्होंने एन0 बी0 पी0 काल का माना। इस जमाव से प्रथम बार लोहे की उपस्थिति स्तर 5 से प्रमाणित हुई जिसमें लोहे की छड़, छल्ला,

थपुए के आकार का हथौड़ा सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त शार्पनर, कार्नेलियन के मनके, मिट्टी के नेट सिंकर,गोले, स्किन रबर, चिड़िया की मृण्मूर्ति, स्टापर, मनके, चूड़ियां, तथा डिस्क भी मिले थे। हड्डी के बने हुए बोन प्वाइंट, बाणाग्र, पत्थर के हथौड़े, निहाई, गोले, लोढ़े, और मनके भी इस जमाव से प्रतिवेदित हुए थे[20]।

उत्खनन कर्ताओं ने पाया कि स्तर 3 और ऊपर के जमाव में उत्तरवर्ती एन0 बी0 पी0 काल के अवशेष नहीं हैं जिससे उन्होंने टीले पर एक सांस्कृतिक व्यवधान होने की सोच बनाई। कारण कि स्तर 2, 1ए एवं 1 के 2.47 मीटर मोटे जमाव से जो पुरातात्विक सामग्री उन्हें प्राप्त हुई उसे उन्होंने कालखण्ड 4 कुषाणकालीन माना। इस जमाव से उन्हें लाल रंग के पात्र खण्ड प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त जो पुरावशेष प्राप्त हुए उनमें इंकपाटॅ टाइप लिड, स्प्रिंकलर, कुषाण कालीन कटोरे, हत्थे युक्त हांडी, पश्चिमी प्रभाव से अनुप्राणित मिट्टी की मानव मूर्तियां, पशुओं की मूर्तियां, कुसिबुल की तरह के पात्र, हंसिया, कीलें, लोहे के छड़, शीशे की चूड़ियां, अंजन शलाका, तांबे के तार, पत्थर की गणेश की प्रतिमा, लोढ़े, हथौड़े, मिट्टी के मनके, सिल आदि मुख्य थे[21]।

अगली निखात SNR-10 जो 16 x 4 मीटर क्षेत्र में 9.04 मीटर की गहराई तक उत्खनित की गई थी, से 19 स्तरित जमाव प्राप्त हुए थे जिनसे पूर्व की निखात के सांस्कृतिक जमावों की पुष्टि हुई[22]। एक अन्य निखात SNR-2J जो 6 x 4 मीटर क्षेत्र में निचले भाग में उत्खनित की गई थी, से कालखण्ड 3 एन0 बी0 पी.काल के साक्ष्य प्रतिवेदित कर सकी थी[23]। इस प्रकार प्रोफेसर सिंह ने सेनुवार का सांस्कृतिक अनुक्रम निम्नवत निर्धारित कियाः

कालखण्ड 1ए	नव पाषाणकाल	2200 ईसा पूर्व–1950 ईसा पूर्व
कालखण्ड 1बी	नव पाषाणकाल–ताम्र पाषाण काल	1950 ईसा पूर्व–1300 ईसा पूर्व
कालखण्ड 2	ताम्र पाषाण काल	1300 ईसा पूर्व–700 / 600 ई0पू0
कालखण्ड 3	एन0 बी0 पी0 प्राथमिक चरण	700 / 600 ई0पू0–500 / 400 ई0पू0
कालखण्ड 4	कुषाण काल	100 / 300 ई0[24]

इस विकास खण्ड के सर्वेक्षण से कुल 28 ऐसे स्थल प्रकाश में आए जहां प्राचीन बस्ती होने की पुष्टि हुई। प्राचीनता के क्रम में अधिवास के सर्वाधिक प्राचीन साक्ष्य पीर पहाड़ी, महुआ डिहरा, माझर कुण्ड और कुर्दो पहाड़ी के शैलाश्रयों में मिलते हैं[25] जहां मध्य पाषाणिक एवं ताम्र पाषाणिक मानव द्वारा शैलचित्रों का निर्माण किया गया है और जिनके जीवन्त साक्ष्य आज भी इन शैलाश्रयों की दीवारों पर अपनी उपस्थिति अंकित किए हुए हैं। इन पहाड़ों से नवपाषाण काल में पठारी भाग मे उतर कर उन्होंने खेती और पशुपालन की जीविका के साथ जीवन यात्रा को आगे बढ़ाया जिसके स्तरित जमावों में साक्ष्य सेनुआर और सकास से प्रतिवेदित हैं। ऐसे अन्य स्थल अभी उत्खनन की राह देख रहे हैं। अधिवास की यह कड़ी सासाराम विकास खण्ड में आज तक सतत चल रही है। भविष्य में होने वाले पुरातातत्विक उत्खननों से यहो के पुरास्थलों से महत्वपूर्ण सूचनाएं मिलने की प्रबल संभावनाएं हैं।

संदर्भः

1. O' Malley L.S.S., Bihar and Orissa District Gazetteers Shahabad, New Delhi, Reprint 2005, P 181.
2. तिवारी श्याम सुन्दर, रोहतास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, वाराणसी, 2008, पृष्ठ 149–152;
3. Censusindia.co.in
4. तिवारी श्याम सुन्दर, रोहतास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, वाराणसी, 2008, पृष्ठ 132
5. Singh Vikas Kumar and others, Preliminary Report on Excavations at Sakas, District- Sasaram, (Rohtas), Bihar, 2018-19, Man and Environment, XLV (1), 2020, PP 66-77.

6. O' Malley L.S.S., Bihar and Orissa District Gazetteers Shahabad, New Delhi, Reprint 2005, P 182; V.A.Smith, Corpus Inscription Indicarum, Vol.I, Page 130; तिवारी श्याम सुन्दर, रोहतास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, वाराणसी, 2008, पृष्ठ 152.
7. O' Malley L.S.S., Bihar and Orissa District Gazetteers Shahabad, New Delhi, Reprint 2005, P 183.
8. तिवारी श्याम सुन्दर, रोहतास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 153
9. Patil D.R., The Antiquarian Remains in Bihar, Patna, 1963, P 522-23
10. वही, पृष्ठ 523
11. ई0 आई0 एम0 1923–24, पृष्ठ 27
12. पाटिल डी0 आर0, उपरोक्त, पृष्ठ 518–19
13. वही, पृष्ठ 524
14. वही, पृष्ठ 525
15. वही, पृष्ठ 526
16. Singh B.P., Early Farming Communities of the Kaimur (Excavations at Senuwar 1986-87, 89- 90), Publication Scheme, Jaipur, पृष्ठ–1.
17. इंण्डियन आर्कियोलोजी 1985–86; ए रिव्यू, पृष्ठ–12–14.
18. Singh B.P., Early Farming Communities of the Kaimur (Excavations at Senuwar 1986-87, 89- 90), Publication Scheme, Jaipur, पृष्ठ–7.
19. वही, पृष्ठ–12–14.
20. वही, पृष्ठ–14–15.
21. वही, पृष्ठ–15.
22. वही, पृष्ठ–15–18.
23. वही, पृष्ठ–19–20
24. वही, पृष्ठ–21.
25. डी0 पी0 तिवारी एवं अनुष्का ओझा, कुर्दो पहाड़ी, सासाराम, बिहार के शैलचित्र, ह्यूमैनिटीज एण्ड डेवलपमेंट, जिल्द 16, नंबर 1–2, जनवरी–दिसम्बर, 2021, पृष्ठ 5–19.

●